राजेन्द्र गायकवाड़

उड़ने वाला साँप

बात 1972 की है। साँप की है और भुखमरी भुगत रहे बनवारी लाल की भी है।

उन दिनों साँप के बारे में कई किंवदन्तियाँ प्रचलित थीं। जैसे साँप के सिर पर मणि होती है। मणि खो जाने पर साँप अन्धा हो जाता है। उड़ने वाले साँप की छाँव पड़ने से आदमी को लकवा हो जाता है। या साँप की केंचुली को किताब में रखने से परीक्षा में अच्छे नम्बर आते हैं, वगैरह। खैर! कहानी के सिरे को हम दूसरी तरफ से पकड़ते हैं।

हमारे कस्बे के बेहद दिलचस्प और बातूनी आदमी थे बनवारी लाल। वे अपनी नौकरी छोड़ चुके थे। बनवारी रेलवे में ड्राइवर थे। उन्हें डर था कि एक दिन उनकी मालगाड़ी का एक्सीडेंट होगा और वे मारे जाएँगे। यह डर इतना बढ़ गया कि उन्होंने नौकरी छोड़ दी। परिवार में सात लोग थे और कमाई का कोई साधन नहीं था। बनवारी लाल की ज़िन्दगी में भुखमरी और दुर्दशा के दिन शुरू हो गए थे।

एक दिन सुबह-सबेरे हमारे कस्बे में एक "अफवाह" फैली कि पास के एक खेत की बाम्बी में एक साँप मिला है जो उड़कर वापिस अपनी जगह आ जाता है। वो आदमी की बोली बोलता है और गायब हो जाता है। यह बात दूधवालों के ज़रिए पूरे कस्बे में फैली, जो सुबह-सुबह आया करते थे।

दिन चढ़ते ही उस जगह अच्छा खासा मजमा लगने लगा। नारियल, फूल, कपूर और अगरबत्ती की दुकानें सजने लगीं, स्थानीय भजन मण्डलियाँ अपनी फ्री सेवाएँ देने लगीं। कड़ाहों में प्रसाद बनने लगा। लोग जी-खोलकर दान-दक्षिणा देने लगे। प्रिंटिंग प्रेस वाले भी पर्चे छपवाकर बाँटने लगे। पर्चे में लिखा होता, "अमुक आदमी को नागदेवता ने सपने में दर्शन दिए। उस आदमी ने 500 पर्चे छपवाकर बँटवाए। एक आदमी ने पर्चे को फाड़कर पैरों से रौंद दिया तो उसके घर में आग लग गई। दो दिन में उसकी पत्नी मर गई.... आप भी 500 पर्चे छपवाकर लोगों के बीच बँटवाएँ आपको धनलाभ होगा।" पर्चे के नीचे प्रिंटिंग-प्रेस का नाम भी लिखा होता।

उड़ने वाले सर्पदेवता की चर्चा चार-पाँच दिनों तक गर्माती रही। लोग तरह-तरह की बातें कहते, जिनमें दिव्यशक्ति और चमत्कार का ज़िक्र होता। कस्बे का व्यापारी-वर्ग भी भला क्यों पीछे होता। वे भी दिल खोलकर दान-चढ़ावा देने लगे। दूर-दूर से लोग इस चमत्कार को देखने और भक्तिरस में डूबने के लिए आने लगे। स्थानीय बसें इस जगह खाली हो जातीं। बसें तभी लौटतीं जब सब लोग "दर्शन" करके वापिस आ जाते। लेकिन हफ्ते दस दिन में यह आग ठण्डी और मन्द पड़ने लगी।

मन्दिर बनवाने के लिए दान में मिला सीमेन्ट, रेत, ईंट, गिट्टी और लोहा गायब होने लगा। वहाँ रखी दान पेटी भी एक रात जाने कौन उठा ले गया। उड़ने वाले साँप की बात आई गई हो गई और लोग धीरे-धीरे इस बात को भूलकर और अपने काम-काज में लग गए।

हुआ कुछ इस तरह कि भीड़-भाड़ और धुएँ-धुन्ध की घुटन साँप बर्दाश्त नहीं कर पाया और बाम्बी के अन्दर ही मर गया।

बहुत दिनों बाद जो रहस्य बनवारी लाल ने पिताजी को बताया वो इस तरह था – बड़े बाबू, दुनिया जिस तरह की है, उसे उसी तरह से हाँकना होता है। सात-सात लोगों को पालना-पोसना था। ज़हर तो दे नहीं सकता था न! मैं भी इंसान हूँ और इंसान की कमज़ोरी और हरकतें जानता हूँ।

मैंने एक सपेरे से दस रुपए में केंचुलधारी साँप खरीदा और उसे दीमक की बाम्बी के पास रख दिया। सुबह-सुबह जब दूधवाले वहाँ से गुज़रने लगे तो मैंने उनको साँप दिखाते हुए कहा कि ये उड़नेवाले नाग देवता हैं। इनने सपने में मुझसे कहा कि मैं तुम्हें यहाँ मिलूँगा। इनने अभी कुछ देर पहले मेरे से अच्छी-खासी बातें कीं। ये संसार के पालनहार हैं। इनकी सेवा करो और जाओ सबको बताओ।

बड़े बाबू "दस पैसे" के साँप से मैंने दुनिया को चराया है।

एक बार एक अखबार ने गलती से रुड्यार्ड किपलिंग (*जंगल बुक* के लेखक) की मौत का समाचार छाप दिया। किपलिंग अखबार को देख अचरज में पड़ गए। कुछ देर सोचकर उन्होंने अखबार के सम्पादक को पत्र लिखाः

क्योंकि आपको हर बात की सही खबर रहती है, इसलिए मेरी मौत का समाचार भी सच ही होगा। मेरी प्रार्थना है कि अपने अखबार की ग्राहक सूची से मेरा नाम हटा दें।

प्रमोद-मीनाक्षी

मेहा का सपना

मेहा अक्सर सुबह नींद से उठते ही कमरे में इधर-उधर कुछ ढूँढने लगती। कभी अपनी माँ से पूछती, "मम्मा वो कहाँ है?" माँ को उसकी बात कुछ समझ नहीं आती। वो उससे कहती, "लगता है तूने सपना देखा है!" और उसे गले लगा लेती।

एक सुबह मेहा जब नींद से उठी तो बारिश हो रही थी। उठते ही उसकी नज़र सामने मेज़ पर रखी किसी चीज़ पर पड़ी। वह भागती हुई अपीन माँ के पास गई और खुशी से चिल्लाई, "मम्मा! सपना, मम्मा! सपना!" माँ कुछ समझ नहीं पाई। मेहा उँगली पकड़कर माँ को कमरे में लाई और मेज़ पर रखा छाता दिखाते हुए फिर से बोली, "देखो मम्मा! सपना!"

चित्रः कनक